ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. NO.- 249-252**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

विकास खण्ड सैदपुर जनपद गाजीपुर में लोगों का भोजन, पहनावा तथा व्यवसाय– भू–सामाजिक अध्ययन

1. डॉ0 विजय श्रीवास्तव
2. प्रो0 डॉ0 जी0एस0 लाल

1. सहायक प्राध्यापक– समाजशास्त्र, 2. पूर्व अध्यक्ष, भूगोल तथा सेवामुक्त पी0जी0 प्राचार्य, उ0प्र0 उच्च शिक्षा राजकीय सेवा, (नई सड़क) सैदपुर–गाजीपुर (उ0प्र0) भारत

Received-28.08.2022, Revised-04.09.2022, Accepted-08.09.2022 **E-mail: dr.mudita78@gmail.com**

सारांशः– ***'विकास खण्ड सैदपुर जनपद गाजीपुर के लोगों के भोजन, पहनावा तथा व्यवसाय, भू–सामाजिक अध्ययन' शीर्षक पर भोजन, पहनावा तथा व्यवसाय का भू–सामाजिक अध्ययन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र व पूर्णतया कृषि कार्य प्रमुख है, जहाँ नगरीय प्रभाव न्यून है और लोगों का परम्परागत व्यवसाय कृषि है। कृषि में खरीफ फसल मक्का, बाजरा, रवी, मटर, दाले उड़द, मूंग, मसूर, चावल तथा रवी फसल में गेहूँ, जौ, चना, मटर प्रमुख है। लोग खाद्यान्न पर आधारित भोजन प्रायः मोटे अनाज का करते हैं। वर्षा की कमी एवं परिवर्तनशील जलवायु के फलस्वरूप अब सावा, कोदो, भइई, करहनी तथा अगहनी धान की फसलें बोई जाती हैं। सामान्यतया पुरूश दिन में लुंगी, धोती, पायजामा, कुर्ता का पहनावा का प्रयोग करते हैं तथा महिलायें साड़ी, ब्लाउज, पेटीकोट तथा, ब्रेस्ट कवर पहनती हैं और पुराने आभूषण कड़ा, छाड़ा, हसुली तथा चूड़ियॉ पहनती हैं और खेती का भी कार्य करती हैं। भिन्न–भिन्न प्रकार की सब्जियॉ भी उगाई जाती हैं। खपत के बाद बचत का भाग पार्श्ववर्ती नगर सैदपुर तथा वाराणसी, जौनपुर को भेजा जाता है। यही आय का साधन है। भावी पीढ़ी शिक्षा के लिए इच्छा रखते हैं और कुछ पुरूष बम्बई, कोलकाता कमाने के लिए जाते हैं। मकान कच्चे तथा पक्के हैं जहॉ रहने के साथ कृषि अनाज तथा कृषि उपकरण रखे जाते हैं। पशु को रखने की व्यवस्था अलग शेड में होती है। दूध का व्यवसाय अधिक है।***

कुंजीभूत शब्द– पहनावा तथा व्यवसाय, भू–सामाजिक अध्ययन, कृषि कार्य, नगरीय प्रभाव, परम्परागत व्यवसाय, फसल।

विषय समस्या– मुख्य समस्या अन्न उत्पादन की है जिससे लोगों को भोजन प्राप्त होता है क्षेत्र में पशु पालन के धंधे से दूध पूर्ति तथा दूध निर्मित पदार्थों की उपलब्धता है। वातावरणीय मिश्रण तथा मानवीय मिश्रण कारकों की खोज करना है जो उनके भोजन, वस्त्र, व्यवसाय पर प्रभाव डालते हैं वे कारक दृश्य और अदृश्य होते हैं। अतः परम्परागत कृषि में मशीनीकरण के प्रयोग से उत्पादन में वृद्धि हो रही है। सिचाई के साधन अब पं0 सेट, नहर तथा ट्यूबेल से सुविधा बढ़ी है। पुरानी पद्धति पुरवट, दोन, मोड, कुऑ से सिचाई मूलतः समान है। लोगों की सोच अब आधुनिक हो रही है लोगों का स्तर बढ़ रहा है। इन तथ्यों का आंकलन, मूल्यांकन तथा क्रियान्वयन से जीवन स्तर में सुधार होगा और जीवन पद्धति में बदलाव आयेगा। इन सब का विश्लेषण आवश्यक है, शोध पत्र में अनुंसधान पर बल दिया गया है।

अध्ययन क्षेत्र का चयन– अध्ययन क्षेत्र का विस्तार25 उ0 अक्षांस से 25034' उ0 अक्षांस तथा 820 पूरब देशान्तर से 82035 पूरब देशान्तर के मध्यम 213.96 वर्ग कि0मी0 क्षेत्र पर जिले के पश्चिम में 40 कि0मी0 दूरी पर अवस्थित है। उत्तर दिशा में करन्डा ब्लाक तथा पश्चिम जौनपुर सीमा लगती है।

क्षेत्र में जिले की 19 प्रतिशत जनसंख्या निवास करती है यह सभी प्रभावित क्षेत्र 1000:900 का अनुपात रखती है और घनत्व 900 प्रति वर्ग मीटर का है। नदियों के मध्य में बांगर भूमि तथा नदियों के किनारे कछारी भूमि खेती के लिए पूर्णतया उपयुक्त है। क्षेत्र 'वातावरणीय भूमि उपयोग समरूप इकाई' के रूप में है जैसा 'एस0 कायस्थ ने हिमाचल के व्यास बेसिन' में तथा 'जी0एस0 लाल ने पर्वतीय क्षेत्र चमोली में बताया है' इस क्षेत्र में सघन खेती, बहुफसली पद्धति के साथ प्राकृतिक खेती की आवश्यकता प्रबल है। शासन ने भी इस पर बल दिया है।

विधितंत्र तथा अनुसंधान का प्रारूपः– शोध की तैयारी में निम्न मानकों की सहायता अनुसंधान के लिए प्रयुक्त है जिससे तथ्यों की खोज में सुविधा मिली है, जो निम्नवत है–

1. आंकड़ों का संकलन सेन्सस, मैग्जीन, बुलेटिन आदि से प्राप्त
2. दराशियरी आंकड़ा क्षेत्रीय सर्वेक्षण से–
3. साक्षात्कार
4. छायाचित्र
5. स्पाट इन्क्वायरी
6. प्रश्नावली
7. अवलोकन
8. अनुसंधान

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

9. परिकल्पना

10. तथ्यों का सत्यापन तथा निष्कर्ष निराकरण

तथ्यों के पहलू का विश्लेषण– शोध पत्र में निम्न तथ्यों के पहलुओं पर वैज्ञानिकता के आधार पर विश्लेषण किया गया है जो लोगों के जीवन का आधार है तथा उनके रहन–सहन के बारे में वैसी जानकारी देता है जैसी भारत के विभिन्न क्षेत्रों में बसे लोगों तथा जातियों की है।

भोजन ताा खाद्य फसले:– लोगों का मुख्य ध्येय भोजन एकत्रीकरण को प्राचीन काल से परम्परा के रूप में रहा है, जो कृषि व्यवसाय और फसलो पर आधारित है।

भोजन के प्रमुख तत्व अन्न प्राथमिकता के आधार पर हार्ड सीरीयल मोटा अन्न जमाने से रहा है। अन्न के अलावा दूध तथा दूध द्वारा निर्मित सामग्री जैसे दही, पनीर, मट्ठा, फल स्थानीय का प्रयोग सामान्यतया होता है इसके अलावा गुड़ और गन्ना का भी प्रयोग होता है। कभी–कभी मांसाहारी भोजन बकरे, मुर्गा तथा मछली का भी प्रयोग है किन्तु यह विशेष अवसरों पर ही होता है।

लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या कृषि उत्पादन और फसलों पर आधारित हैं अध्ययन क्षेत्र में 900 व्यक्ति प्रति वर्ग कि0मी0 का घनत्व है। अतः खेती का कार्य गहन कृषि तथा बहुफसली का है। खरीफ फसलों में बाजरा, रगी, सावा, कोदो, मडुवा, दालों में अरहर, मसूर, उड़द, मूंग की दालों का फसलों से उत्पादन होता है। क्षेत्र में सब्जियों की भी खेती होती है, मुख्य रूप से आलू, प्याज, नेनुआ, लौकी, सतपुतिया, टिंणा, भिन्डी, पालक, बथुआ तथा मेथी भी उगायी जाती है जो लोगों के भोजन का एक भाग है। अध्ययन क्षेत्र से सब्जियों का निर्यात नगरों में वाराणसी, जौनपुर को भेजी जाती है। सब्जी तथा फल का कार्य सोनकर जाति के लोग प्रमुख रूप से व्यापारिक स्तर पर करते हैं उन्हें 'कृषक स्वर्णकार' कहा जाता है। वर्षा जल की कमी होने पर नहर, ट्यूबेल तथा पं0सेट से सिचाई और खादों का प्रयोग होता है। महिलायें भी खेती में सहयोग देती हैं। सिचाई की परम्परागत व्यवस्था जैसे पुरवट, दोन, दवरी, रहट लगभग क्षेत्र से विलुप्त हो गया है क्योंकि वाटर टेबल का स्तर गिर गया है। जायद की फसलों का प्रचलन सोनकर जाति की देन है। रबी फसलों में गेहूँ, जौ, मटर, चना उगाया जाता है। खपत के बाद अन्न को बीज गोदाम या घर के स्टोर में भूसे के अन्दर सुरक्षा के दृष्टि से रखा जाता है। फसलों के उत्पादन का अध्ययन निम्न गांवों के चयनित अध्ययन पर किया गया। ये ग्राम तुलसीपुर, मठ उचौरी, नरायनपुर ककरही, भभोरा, खानपुर, होलीपुर तथा लखनिया है। शोधार्थी जन्मजात कृषक है जिसे गांव तथा लोगों से प्रेम है वहॉ का वातावरण उत्तम है।

चुने हुए स्थानों पर प्रत्येक रविवार को पिरीयाडिक बाजार हाट लगती है वहॉ लोग अपने बचत सामग्री को बेचने के लिए जाते हैं और आवश्यक सामान खरीदकर लाते हैं सामानों में चावल, गेहूँ, तरह–तरह की सब्जियॉ, गुड़, भेली, राब, गन्ना जूस तथा अन्य जूस इत्यादि हाट में दिखाई देता है। मांस, मछली, दूध स्थानीय फल मौसमीनुसार आम, अमरूद, इमली, जामुन भी देखे जाते हैं। खेत में प्रयुक्त होने वाले उपकरण, खाद, सिचाई के साधन जैसे पाइप, पं0 सेट, दूध तथा दूध निर्मित पदार्थो की उपलब्धता भी हार में उपलब्ध होती है। छेना, पनीर, मट्ठा, खोआ भी रहता है।

शादी समारोह तथा पार्टी के योग्य सामान, खिलौने, मिट्टी के बर्तन पुरवा, ढकनी और बांस के बने सामान, दवरी, छिट्टा, कुरूई आदि भी हाट में निकली है। परिवर्तनशीलता जलवायु की तथा हरितक्रान्ति के समान भी हाट में दिखाई देता हैं मधुकक्खी के सामान भी उपलब्ध रहता है। मिठाई में जलेबी, इमरीती, बेसन के लड्डू आदि भी बेचे तथा खरीदे जाते हैं। इन समस्त सामानों को ले जाने हेतु यातायात, बैलगाड़ी, रिक्सा, ठेली आदि की व्यवस्था किसान सुविधानुसार करते हैं। प्रचार प्रसार की सुविधा रहती है।

पहनावा तथा आभूषण– अध्ययन क्षेत्र में पुरूष सामान्यतया दिन में लुंगी, कमीज, कुर्ता, धोती, पायजामा पहनते हैं किन्तु मेले, समारोह, पर्व के अवसरों पर उनके कपड़े मौसमानुसार पहनते हैं, यानि शिक्षा, प्रचार, प्रसार के कारण सूती, उनी कपड़े पहनते हैं। औरतें प्रायः साड़ी, ब्लाउज, पेटीकोट तथा ब्रेस्ट कवर तथा कुर्ती पहनती हैं। बाल में फूल एवं सजावट कम दिखाई देता है, किन्तु समारोह, शादी, पर्व आदि अवसरों पर अच्छी पोशाक भी पहनती है। मेला, सामाजिक समारोहों एवं पार्टी के अवसर पर उनका पहनावा बदल जाता है। कस्बे की महिलायें अच्छे वस्त्र, पहनावा में घाघरा, नाइटी का प्रयोग करती हैं चप्पल जूती पहनती हैं किन्तु ग्रामीण अंचल की महिलायें प्रायः नंगे पांव रहती हैं तथा सामाजिक अवसरों पर चप्पल, सैंडिल धारण करती हैं। ग्रामीण महिलायें दुकानों पर सहायता देती हैं।

ग्रामीण महिलायें परम्परागत आभूषणों का प्रयोग करती हैं जैसे हंसुली, छाड़ा, करधनी, तोड़ तथा चूड़ियॉ पहनती हैं जबकि कस्बो, नगर की महिलायें कम आभूषण धारण करती हैं चेन सोने की अंगूठी अवश्यपहनती हे। मुस्लिम महिलायें काला

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

कवर तथा बुर्का धारण करती हैं तथा सिर और मुँह को ढकती हैं। बच्चे देहात के खेत जैसे कबड्डी, सुटर तथा गुल्ली डंडा का खेल खेलते हैं। अब गांवों में क्रिकेट का प्रचलन दिखाई देता है। ग्राम करमपुर में मेघवरन सिंह स्टेडियम में हाकी खेल कराया जाता है जो स्वर्गी श्री तेजबहादुर सिंह की देन है वहॉ से ललित मोहन उपाध्याय वरमिघम में कांस्य प्राप्त कर चुके हैं तथा विपिन पाल का भी नाम हाकी में लिया जाता है मुड़ियार ग्राम की डॉ0 तृप्ति सिंह का खेल में अर्जित ख्याति से खेल कोटा के अन्तर्गत गोरखपुर विश्वविद्यालय में सहायक आचार्य पद पर नियुक्ति भी हो चुकी है। नगर सैदपुर के पाश्वर्ती सब–कस्बे में जैसे खानपुर, भीमापार, अचौरी, मौधा, सौना, पोखरा तथा अन्य ऐसे स्थानों के लोगों के पहनावा में थोड़ा अन्तर पाया जाता है। लड़किया प्रायः सलवार समीज पहनती हैं। नगर लड़कियॉ खेल में तथा यातायात में स्कूटी का प्रयोग करती हैं। ग्रामीण अंचल में बहुत छोटे बच्चे धूल में खेलते हैं। यादव, पाल, गड़ेरिया के वस्त्र में काचल भी होता है अनुसूचित जाति के लोगों में गांवों में उनके पहनावा में भिन्ता पाई जाती है जो गरीबी के कारण से है जबकि कस्बों, नगर के बच्चे क्रीम पाउडर का सेवन करते हैं, बालों का शौक हे।

व्यवसाय– अध्ययन क्षेत्र में निम्न व्यवसाय प्रमुख रूप से किये जाते हैं।

1. कृषि खेती बारी
2. पशुपालन,
3. बकरी तथा भेड़ पालन,
4. कुटीर उद्योग,
5. ग्रामीण दुकानें गांव तथा सड़कों पर

कृषि व्यवसाय में खरीफ, जायद तथा रवी के फसलों से उत्पादन अन्न का होता है जो लोगों का भोजन है जैसे मक्का, बाजरा, सावा, कोदो, मडुवा, धान प्रमुख फसलें हैं। जायद में आलू, प्याज, लहसुन, धान तथा सब्जियॉ जैसे भिण्डी, करेला, लौकी, सतपुतिया आदि अधिक मात्रा में उगाई जाती हैं। बचत नगरों में भेजी जाती है और आय का साधन बनती हैं। प्राकृतिक खेती को अब बल मिल रहा है जो उपयोगितान्नमुख तथा बाजारोंन्मुख है उससे आय मिलती है। मिट्टी की उर्वरता के संरक्षण हेतु गोबर खाद का प्रयोग किये जाने पर जोर दिया जाता है। सब्जियों, तिलहन, दलहन तथा दालों को व्यावसायिक रूप देकर किये जाने हेतु प्रचार प्रसार किया जा रहा है। जौ, मटर, सूर्यमुखी, सोयाबीन की खेती को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। पशुपालन का धंधा प्रायः यादव जाति के लोगों द्वारा किया जाता है।

दूध आपूर्ति तथा छेना, पनीर, मट्ठा द्वारा आय की प्राप्ति होती है। भेड़, बकरी से दूध, उन तथा खाद की प्राप्ति होती है। छोटे स्तर पर कुटीर उद्योग में रस्सी बनाना, बांस से दौरी, पंखा तथा लकड़ी के सामान बनाये जाते हैं। उत्पादित पदार्थों के उपयोग के बाद बचत को नगरों में बेचकर किसानों की आय में वृद्धि होती है। क्षेत्र की 'स्थिर अर्थव्यवस्था' में सुधार हो रहा है क्योंकि कृषि तथा सभी क्षेत्रों में तकनीकी ज्ञान, नवाचार का प्रचार प्रसार हो रहा है। फसलों की विविधता हो रही है।

उपसंहार– समाज में परिवर्तन तथा आर्थिक विकास बढ़ रहा है, कृषि उत्पादन में बढ़ोत्तरी की जा रही है फसलों की विविधता के माध्यम से तथा पशुपालन में दूध व्यवसाय तीव्र गति से बढ़ रहा है। पहनावा आभूषण के प्रति लगाव बढ़ रहा है और भोजन तथा खाद्य सामग्री में परिवर्तन हो रहा है। फलतः स्थिर अर्थव्यवस्था में वृद्धि हो रही है। अध्ययन के क्षेत्र में समुचित विकास हो रहा है और प्राचीन खेती, व्यवसाय में रूपान्तरण हो रहा है जिससे लोगों के जीवन स्तर में सुधार हो रहा है। पीढ़ियों का शिक्षा के प्रति लगाव बढ़ रहा है। भोजन, पहनावा में व्यापक परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कायस्थ, एस0एल0 : हिमालय व्यास बेसिन में, आवास समाज तथा अर्थव्यवस्था का अध्ययन, एन जी एस, बी0एच0यू0, वाराणसी, 1956।
2. श्रीवास्तव, बी0के0 : सोन नदी में समाज, आवास तथा अर्थव्यवस्था का अध्यन, गोरखपुर विश्वविद्यालय।
3. लाल, जी0एस0 : हिमालय के चमोली जिले में भूमि उपयोग प्रतिरूप, पी0एच0डी0 शोध प्रबन्ध, आगरा विश्वविद्यालय।
4. वर्मा, आर0के0 : देहरा घाटी में समाज परिवर्तन तथा आर्थिक विकास, पी0एच0डी0 शोध प्रबन्ध, गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर।
5. श्रीवास्तव, विजय : मकान तथा परिवार सैदपुर विकास खण्ड जिला गाजीपुर में– एक अध्ययन अनुकृति–रेफर्रड जनरल, बी0एच0यू0 लंका, वाराणसी, वाल्यूम 3, नं0 1, पेज 117–118, 2013।
6. लाल, जी0एस0 तथा श्रीवास्तव, विजय: सैदपुर ब्लाक में ग्लोबल वार्मिंग अध्ययन, अनुकृति, रेफर्रड जनरल, बी0एच0यू0

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

लंका, वाराणसी, वाल्यूम 2 नं0 7, पेज 149–150, 2021।

7. लाल, जी0एस0 तथा श्रीवास्तव, विजयः भारत में सोलर एनर्जी की निर्भरता–एक अध्ययन, उ0प्र0 में, शोध दृष्टि जनरल लंका, वाराणसी, वाल्यूम 112 नं0 7, पेज 103–104, 2021।
8. श्रीवास्तव, विजय : सामाजिक परिस्थितिय पद्धति– सैदपुर विकास खण्ड अध्ययन, शोध दृष्टि जनरल लंका, वाराणसी, वाल्यूम 13 नं0 3, पेज 51–57, 2008।
9. रेन्ड्रयू, डबलू, जी
10. हंटिगटन, इ : पल्स आफ एथिया
11. पन्त, एस0डी0 : भूतकाल में जलवायु सोसल इकोनामी आफ हिमालया ब्लाक सैदपुर का संख्यिकी पत्रिका।

*****